त्रिदिवसीया अन्ताराष्ट्रिया शोधसङ्गोष्ठी

संस्कृते भारतीयकलायाः सौन्दर्यस्य च तत्त्वम्

CONCEPTS OF INDIAN ART AND AESTHETICS IN SANSKRIT

26-28 सितम्बर, 2015

संरक्षकः

प्रो. गिरीशचन्द्र त्रिपाठी

कुलपतिः

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः, वाराणसी

अध्यक्षः, संगोष्ठ्यायोजनसमितेः

प्रो० श्रीकिशोर मिश्रः

संयोजकः

प्रो० गोपबन्धु मिश्रः

अध्यक्षः, संस्कृतविभागः

Mob: 9450870788, Email ID- gopabandhuh@gmail.com

सहसंयोजिका

प्रो. मनुलता शर्मा

Mob: 9450710319, Email ID- ajasramanu@yahoo.co.in

आयोजकः

संस्कृतविभागः,कलासंकायः

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः, वाराणसी-221005

दूरभाष:0542-6703153, E.mail ID hd_sans@bhu.ac.in

संस्कृते भारतीयकलायाः सौन्दर्यस्य च तत्त्वम्

कला सौन्दर्यं च चिन्तनस्य महत्त्वपूर्णं पक्षद्वयं विद्यते। एतद् द्वयं मानवजीवनं सुन्दरं प्राञ्जलं परिष्कृतं च विधातुं सर्वतोभावेन सहायकं भवति। मानवस्य कृते स्वस्योपलब्धिम् अपरत्र सर्वोत्कृष्टरीत्या सम्प्रेषयितुं 'कला' उत्तमं साधनं विद्यते। "कलयति स्वस्वरूपावेशेन तत्तद् वस्तु परिच्छिनत्ति इति कलाव्यापारः। कलयति स्वरूपमावेशयति वस्तुनि वा तत्र तत्र प्रमातरि कलनमेव कला" इति शिवस्वरूपविमर्शिन्याम् आचार्यः क्षेमराजः। भारतीयमनीषायां कलासाधनायाः परम्परातीव प्राचीना तथा चास्येतिहासोऽत्यन्तं समृद्धो विद्यते। अत्र कलाचर्चायां संख्याभेदेन सहार्थभेदोऽपि द्रष्टव्य एव।उपनिषत्सु संज्ञानाज्ञानादिभिः षोडशैः कलाभिरुपेततया आत्मा 'षोडश' इतिपदवाच्यो दृश्यते।प्राचीनसाहित्ये पूर्णिमायाश्चन्द्रः षोडशकलावानुच्यते, तथा च भगवतः पूर्णावतारोऽपि षोडशकलायुतः कथ्यते।वात्स्यायनस्य कामसूत्रे शुक्रनीतौ च कलायाः ६४ प्रकाराः, ललितविस्तरे तस्य ८६ प्रभेदा निरूपिताः। जैनानां बौद्धानां च परम्परायां ६४ कलानां सूची लभ्यते। एतदतिरिच्य भारतीयायां नाट्यकलायां मूर्तिकलायां स्थापत्यादिकलायां च प्रत्येकं संख्याया अर्थस्य च वैशिष्ट्यं निगूढमस्ति।

कलायाः सौन्दर्यस्य चान्योन्याश्रयः सम्बन्धो विद्यते। कलायाः सिद्धौ सौन्दर्यस्य समधिकं निवशो हेतुर्भवति।कलास्वरूपं वीक्ष्यास्माकीनं चित्तं यद् द्रवीभूतं भवति तत्र सौन्दर्यस्य निवेश एव कारणम्।

संस्कृतवाङ्मयम् एवंविधानां कलानां तद्धेतुभूतस्य सौन्दर्यस्य चाक्षय आगारो विद्यते ।एतस्यागारस्यालोडनं तज्जन्यं कलामौक्तिकानां सञ्चयनं ज्ञानराशेः संवर्धनाय अतीवावश्यकं विद्यते।देशे विदेशेषु च विद्वांस एतस्मिन् विषये प्रयतमानाः सन्ति।तेषां तानि तानि कार्याणि पुरस्कर्तुं नवीनानि च तथ्यान्यूहितुं संस्कृतविभागः २०१५तमवर्षस्य २६-२८ सितम्बर दिनाङ्केषु **संस्कृते भारतीयकलायाः सौन्दर्यस्य च तत्त्वम्** इति विषयमाश्रित्य दिवसत्रयव्यापिनीम् अन्ताराष्ट्रियां शोधसङ्गोष्ठीम् आयोजयति।गोष्ठ्याम् एतस्यां निम्नोक्तानुपविषयान् तत्तुल्यानपरान् वाश्रित्य लिखितानि शोधपत्राण्यामन्त्र्यन्ते।

१. वैदिकवाङ्मये भारतीयायाः कलायाः सौन्दर्यस्य वा तत्त्वानि।

२. पौराणिके वाङ्मये भारतीयायाः कलायाः सौन्दर्यस्य वा तत्त्वानि।

३. दार्शनिकेषु प्रस्थानेषु भारतीयायाः कलायाः सौन्दर्यस्य वा तत्त्वानि।

४. व्याकरणशास्त्रे भारतीयायाः कलायाः सौन्दर्यस्य वा तत्त्वानि।

५. संस्कृतनाट्यसाहित्ये भारतीयायाः कलायाः सौन्दर्यस्य वा तत्त्वानि।

६. संस्कृतकाव्यसाहित्ये भारतीयायाः कलायाः सौन्दर्यस्य वा तत्त्वानि।

७. शैवशाक्तवैष्णवादिप्रस्थानेषु भारतीयायाः कलायाः सौन्दर्यस्य वा तत्त्वानि।

८. पाण्डुलिपिषु भारतीयायाः कलायाः सौन्दर्यस्य वा तत्त्वानि।

संस्कृत में भारतीय कला एवं सौन्दर्य के तत्त्व

कला एवं सौन्दर्य चिन्तन के ऐसे महत्त्वपूर्ण पक्षद्वय हैं जो मानवजीवन को सुन्दर, प्राञ्जल एवं परिष्कृत बनाने में सर्वाधिक सहायक हैं।कला एक ऐसी साधना विशेष है; जिसके द्वारा मनुष्य अपनी उपलब्धियों को सुन्दरतम रूप में दूसरों तक सम्प्रेषित कर सकने में समर्थ होता है। शिवस्वरूपविमर्शिनी में आचार्य क्षेमराज द्वारा प्रस्तुत यह विवेचन भी इसी तथ्य की पुष्टि करती है कि- "कलयति स्वस्वरूपावेशेन तत् तद् वस्तु परिच्छिनत्ति इति कलाव्यापारः। कलयति स्वरूपमावेशयति वस्तुनि वा तत्र तत्र प्रमातरि कलनमेव कला।" अर्थात् जो नव-नव स्वरूप प्रथमोल्लेखशालिनी संवित् वस्तुओं में प्रमाता के स्व को अर्थात् आत्मा को परिमित करती है, इसी का नाम कला है। स्व का कलन अर्थात् आत्माभिव्यञ्जन ही कला है। कला किसी भी देश की साहित्यिक, सांस्कृतिक, साङ्गीतिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं शिल्पशास्त्रीय उपलब्धियों का प्रतीक होती है। इसका स्वरूप विविधवर्णी एवं आयाम अत्यन्त व्यापक होता है। भारतीय चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में कला साधना की परम्परा अत्यन्त प्राचीन एवं इसका इतिहास अत्यन्त समृद्ध रहा है। यहाँ कला चर्चा में संख्या भेद के साथ-साथ अर्थ भेद भी द्रष्टव्य है। जैसे उपनिषत् साहित्य में आत्मा को सोलह कलाओं से पूर्ण माना गया है। ऐतरेय उपनिषद् के तृतीय अध्याय (३/२) में आत्मा की इन सोलह कलाओं का संकेत किया गया है-' संज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं मेधा दृष्टिर्धृतिर्मतिर्मनीषा जूतिः स्मृतिः संकल्पः क्रतुरसुः कामो वश इति सर्वाण्येवैतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति।' इन्हीं सोलह कलाओं से उपेत होने के कारण आत्मा को षोडशी भी कहा जाता है। इसी प्रकार प्राचीन साहित्य में पूर्णमासी के चन्द्रमा को भी सोलह कलाओं से पूर्ण माना गया है। पुनः प्राचीन साहित्य में पूर्णावतार की सोलह कलाएँ भी कथित हैं। वात्स्यायन के कामसूत्र एवं शुक्रनीति में कला के ६४ प्रकारों का विवेचन है वहीं ललित विस्तर इसके ८६ प्रभेदों का निरूपण करता है। जैन एवं बौद्ध परम्परा के ग्रन्थों में चौंसठ कलाओं की सूची मिलती है; जबकि जैन आचार्य राजशेखर सूरि के प्रबन्धकोश में इसके ७२ प्रकारों का विश्लेषण है।

कला एवं सौन्दर्य का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। कला की उत्पत्ति सौन्दर्यबोध से मानी जाती है और कला की सिद्धि के मूल में भी सौन्दर्य का अधिकाधिक निवेश कारण हुआ करता है। ऐसा निवेश जहाँ उस कला रूप को देखते हुए मन द्रवीभूत हो जाए; विगलित हो जाए। 'सुष्ठु उनत्ति चित्तं द्रवीकरोतीति सौन्दर्यम्।' संस्कृत वाङ्मय सौन्दर्य एवं कला के विविध स्वरूपों का अक्षय आगार है । इस आगार का आलोडन फलस्वरूप संस्कृत वाङ्मय में सम्प्राप्त कला मौक्तिकों का सञ्चयन ज्ञानराशि के अन्वेषण एवं सञ्चयन की दृष्टि से अत्यावश्यक है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत कर संस्कृत विभाग सितम्बर,२०१५ मास की २६-२८ तिथियों में **"संस्कृत में भारतीय कला एवं सौन्दर्य के तत्त्व"** शीर्षक से एक त्रिदिवसीय अन्ताराष्ट्रिय शोध सङ्गोष्ठी का आयोजन करने हेतु कृतसंकल्प है। इस सङ्गोष्ठी के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों को केन्द्रित कर लिखित शोधपत्र आमन्त्रित हैं-

1. वैदिक वाङ्मय में भारतीय कला अथवा सौन्दर्य के तत्त्व।
2. पौराणिक वाङ्मय में भारतीय कला अथवा सौन्दर्य के तत्त्व।
3. दार्शनिक प्रस्थानों में भारतीय कला अथवा सौन्दर्य के तत्त्व।
4. व्याकरण शास्त्र में भारतीय कला अथवा सौन्दर्य के तत्त्व।
5. संस्कृत नाट्यसाहित्य में भारतीय कला अथवा सौन्दर्य के तत्त्व।
6. संस्कृत काव्यसाहित्य में भारतीय कला अथवा सौन्दर्य के तत्त्व।
7. शैव, शाक्त, वैष्णव आदि प्रस्थानों में भारतीय कला अथवा सौन्दर्य के तत्त्व।
8. पाण्डुलिपियों में भारतीय कला अथवा सौन्दर्य के तत्त्व।

CONCEPTS OF INDIAN ART AND AESTHETICS IN SANSKRIT

Art and Aesthetics are two vital components of Indian wisdom. Both of them make our life beautiful, clear and purified. Art is one of the best ways to communicate one's own feeling and achievement in the best possible manner. In Indian culture, the role of art and history of its insertion are the oldest of all. Here the Atman is 'Shodasha' having sixteen qualities naming Samjnana, Aajnana etc. The full moon is adorned with sixteen qualities. The full incarnation (or Purnavatara) is also qualified with sixteen specialities. In Kamasutra of Vatsyayan and in Shukraniti there are 64 types of art; Lalitavistara has enumerated 86 varieties of art.. In Jaina and Bauddha tradition 64 types of art are found. Besides, in the dramatic art, sculpture, iconography etc. there are elaborate description of different measures and justifications therein.

Art and Aesthetics are interdependent. The performance of art is known by its aesthetic sense. Our mind becomes impressed by any piece of art due to the subtle insertion of aesthetic sense in it.

Multidimensional concepts of Indian Art and Aesthetics are widely reflected in both Vedic and Classical Sanskrit literature. The scholars, both oriental and occidental are engaged in research in order to find out the gems from this Ocean. In order to appraise and analyse the updated research findings in this area, the Department of Sanskrit of Banaras Hindu University, Varanasi is going to organise a Three-days International Seminar on 26-28 September, 2015 on **CONCEPTS OF INDIAN ART AND AESTHETICS IN SANSKRIT**. Hence the Dept. invites the written papers on the sub-subjects, which are as follows, or alike.

1. Concepts of Indian Art or Aesthetics in Vaidika Vanmaya.
2. Concepts of Indian Art or Aesthetics in Pauranika Vanmaya.
3. Concepts of Indian Art or Aesthetics in schools of Philosophy.
4. Concepts of Indian Art or Aesthetics in Vyakarana Shastra.
5. Concepts of Indian Art or Aesthetics in Sanskrit drama.
6. Concepts of Indian Art or Aesthetics in Sanskrit Kavyas.
7. Concepts of Indian Art or Aesthetics in Schools of Shiva,Shakti,Vishnu etc.
8. Concepts of Indian Art or Aesthetics in Manuscripts

Registration

Registration in advance is essential.

Registration Fee is Rs. 1000/- for the Research Scholars and Rs. 1500/- for others. It is to be sent through Bank Draft drawn in favour of **THE ORGANISER, INTERNATIONAL SEMINAR, DEPT. OF SANSKRIT, BANARAS HINDU UNIVERSITY, VARANASI** payable at **Varanasi** or it may be paid in cash followed by collecting its receipt.

There will be no instant registration on the days of Seminar.

No TA/DA will be paid to the participants. Accommodations will have to be arranged by the participants on their own. However, on due information of the need by 31st August, 2015, accommodation for them may be arranged and the payment for the same will have to be made by them.

Paper-presentation

Summaries of Papers (not exceeding 250-300 words) along with the filled in Registration Form are invited in **Sanskrit/Hindi/English** through E-mail ID of Organiser/ Co-Organiser/Dept. of Sanskrit (noted above) or by Registered/Speed post by 31st July, 2015. ‘Kruti Dev 10’ (for Sanskrit and Hindi) and ‘Times New Roman/ Gandhari Unicode’ (for English) fonts may be used for the Summaries. Selected papers will be accepted for presentation during the Seminar. Full papers may be sent to the Organiser by 31st August, 2015.

Registration Form

International Seminar

on

CONCEPTS OF INDIAN ART AND AESTHETICS IN SANSKRIT

संस्कृते भारतीयकलायाः सौन्दर्यस्य च तत्त्वम्

26-28 September, 2015

Dept. of Sanskrit, Faculty of Arts, Banaras Hindu University, Varanasi

1. Name (in BLOCK LETTER) :…………………………….

2. Designation : …………………………….

3. University/College/Institution : …………………………….

4. Specialisation : …………………………….

5. Mailing Address : …………………………….

…………………………….

…………………………….

6. Tel./ Mob. No. : …………………………….

7. E-mail ID : …………………………….

8. Title of Paper : …………………………….

…………………………….

9. Date of Arrival : ………………………… Time: …………….

9.Date of Departure: ………………………… Time: …………….

Date : Signature